

# Sarvajanik Karyakram

Date : 2nd March 1977  
Place : India  
Type : Public Program  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 12
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

मानव को यह सोचना चाहिये कि परमात्म ने हमें क्यों बनाया है? हमारे जीवन का कोई लक्ष्य है या यूँ ही भगवान ने हमें अमीबा से मनुष्य बनाया है। इतनी परेशानी उठा कर इतने युगों तक, इतने योनियों में से गुजर कर परमात्मा ने मनुष्य की ये जो सुन्दर कृती बनायी है, वो कोई न कोई कारणवश ही बनायी है। हो सकता है, कि अभी वो उस दशा में नहीं पहुँचा है जहाँ वो इस चीज़ को जान सके कि ये कृती क्यों बनायी है। हो सकता है, अभी वो अपने कार्य-कारण को समझ नहीं पाया होगा। लेकिन अवश्य जरूर कोई न कोई वजह तो होनी ही चाहिये कि एक अमीबा से मनुष्य क्यों बना? और अगर कोई वजह है भी तो मनुष्य को उसे जरूर खोज निकालना नितांत आवश्यक है। जब वो उसे नहीं खोज पाता है, जब उसे जान नहीं पाता है, तो उसको परेशान होना भी बिल्कुल ही स्वाभाविक है। यह स्वाभाविक बात है कि आज मनुष्य अत्यंत चिंतित है, परेशान है, घबरा रहा है। उसको यह नहीं पता, कि यह घबराहट कहाँ से आ रही है, किस कारण वो इतना व्यस्त है।

सहजयोग इस बात का उत्तर है। सहज - 'सह' माने साथ 'ज' माने पैदा हुआ। जो आपके साथ पैदा हुआ है, अधिकार, योग का, परमात्मा से एकाकार होने का, उसी को सहजयोग कहते हैं। सहजयोग, जब मनुष्य अमीबा था, तभी वो सहजयोग हुआ और उससे वो जब चतुष्पाद हुआ, तभी सहजयोग घटित हुआ था और जब से वो द्वि-पाद हुआ तभी सहजयोग बना था और जब से वह मनुष्य हुआ था तभी सहजयोग घटित हुआ था। और आज का जो सहजयोग है, ये मनुष्य को अपना अर्थ बताने के लिये, ये उसके अंतिम चरण, अंतिम लक्ष्य है। इसके बारे में खोज-बीन करते हुए अपने भारत-वर्ष में, आदि-काल में बहुत से ऋषि-मुनियों ने मनन द्वारा, मेडिटेशन द्वारा अंदर अनेक चीज़ों का पता लगाया।

परशुराम के समय में, जब परशुराम का जन्म हुआ था, उस समय लोगों ने जंगलों में खोजने की कोशिश की। सारी दुनिया से अपने को काट कर वो ब्रह्मचर्य में रह कर, एकाद छोटी सी गुफा में छिप कर के उन्होंने अनेक वर्षों तक तपस्या की। और उसके बाद उन्होंने जो मनुष्य के अंदर के सूक्ष्मतम गुप्त रहस्य हैं उनका पता लगाया। उनकी खोज भी जो होती रही, उसके लिये थोड़े से लोग, बहुत थोड़े से लोग लाभ उठा सके क्योंकि ये कार्य अत्यंत सूक्ष्म था और समाज में रहते हुए इस कार्य को करना बहुत ही कठिन था। इन लोगों ने अपने धर्मग्रन्थों में या अपने पुस्तकों में, जिधर उन्होंने लिखी भी हो, अनेक तरह से इन सब सूक्ष्म तत्त्वों का वर्णन किया है। लेकिन कलियुग जिसे कि आज हम मॉडर्न टाइम्स कहते हैं, इसमें आज वो समय आ गया है, जिसे कि हम बाहर का समय कह सकते हैं। जैसे कि एक पेड़ पर सुरमई का भी फूल खिलता है और एकाद ही फल लगता है। अनेक वर्षों तक इसी तरह से चलता रहता है। उसके बाद जब बाहर आती है, तो अनेक फूल खिल जाते हैं। अनेक फूल खिल कर के एकदम से ही उनके फल बन जाते हैं। सहज में ही उनके फल बन जाते हैं। वो कैसे बनते हैं, क्यों बनते हैं, यह कोई भी नहीं जानता है। आज सब फूल हैं, कल उसी में से फल निकल आयेंगे।

उसी प्रकार आज कलियुग में बहार आयी हुई है। और आपका हक है कि आप जानें कि आप क्या हैं, आप का क्या अर्थ है, आप क्यों इस संसार में आये हैं। इस चीज़ को आप जान लें, ये आपकी खुद अपनी सम्पदा है। जैसे कि कोई दीप पूरी तरह से संवारा जाता है, उसके अन्दर तेल-बाती सब ठीक से रख दी जाती है और उसको दिवाली के दिन सब को एक लाइन में लगा दी जाती है, तब एक जला हुआ दीप ले कर के आप अनेक दीप जला सकते हैं। उसी प्रकार सहजयोग एक अत्यंत सहज सरल तरीका है। और मनुष्य को इस बात को नहीं सोचना चाहिये कि ये इतना सरल क्यों है। धर्म के मामले में मनुष्य हमेशा उलटा ही सोचता है। पहले अगर काशी जाना होता था, तो मनुष्य को तीन-चार महीने चलना पड़ता था। लेकिन अगर आज आपको काशी जाना है, तो अगर आप सवेरे यहाँ से निकले तो शाम को आप काशी पहुँच सकते हैं। तब मनुष्य क्यों नहीं सोचता है, कि उसके लिये तो सुनते हैं कि बड़ा सामान जुटाना पड़ता है, कठिन तपस्या करनी पड़ती है, तब कहीं हम पहुँचते हैं। गर सहजयोग के मामले में भी ऐसी ही अगर कोई विशेष व्यवस्था हो गयी हो, तो उसके बारे में इतनी चर्चा आप को क्यों होना चाहिये? गर कोई विशेष चीज़ आपको मिलने वाली है और उसका लाभ आपको होने ही वाला है, तो उसके बारे में इतनी शंका क्यों होनी चाहिये। और आखिर शंका भी आपको उस चीज़ की होनी चाहिये, जहाँ पर आप को कुछ लेना-देना पड़े या किसी चीज़ की माँग हो या कोई ये कहें कि देखो भाई, यहाँ आप को तीन साल का कोर्स करना पड़ेगा और आपको इतनी फीस देनी पड़ेगी और आप को रोज आना पड़ेगा या कहे कि आपको भूखे मरना पड़ेगा, या आपसे कहे कि आपको सर के बल खड़े रहना पड़ेगा, ये तो सब हम कुछ कहते नहीं तब फिर इतना शंका होकर के क्यों सोचना कि ऐसे कैसे हो सकता है, हो ही नहीं सकता है।

हो सकता है, अब यहाँ हॉल में कम से कम पचास फीसदी लोग ऐसे बैठे हुए हैं जिन के साथ ये घटित हो चुका है। और आपके साथ भी होना चाहिये। लेकिन मनुष्य का विचार जो है, वो इस तरह से चलता है। अब रही बात कि हमारे अन्दर में वास्तव में ऐसी कोई व्यवस्था है क्या? कोई हमारे अन्दर ऐसा अंकुर है क्या? जैसे कि हर एक बीज में होता है, जिसके फल स्वरूप आप अपने पुनर्जन्म को प्राप्त करते हैं। ज्ञानेश्वर जी ने, जनक ने, नानक ने, कबीरदास जी ने, गुरु वशिष्ठ ने, मार्कण्डेय जी ने और सब से बड़े आदि शंकराचार्य जी, कुण्डलिनी के बारे में उन्होंने अनेक बार वर्णन किया हुआ है। देवी महात्म्य आप पढ़े या आप देवी सहस्रनाम भी पढ़े तो उसमें, उनके सारे वर्णन में लिखा है कि वो कहाँ-कहाँ स्थित होती है, कौन से चक्रों पर स्थित होती है, कौन से मार्ग से वो उठती हैं आदि सब कुछ में उनका वर्णन है। लेकिन हमारे लिये जिसको अंग्रेजी और जैसे ग्रीक और लेटिन में है, क्योंकि हम लोग तो इतने अंग्रेजी हो गये हैं, कि हमें अपने ही चीज़ों के बारे में कुछ मालूम नहीं है। अब घर में अगर मंत्र उच्चार हो रहे हैं तो हम सुन रहे हैं, आयें कोई पंडित बाबा तो उसको कुछ रुपये पैसे दे दिये तो काम खतम, उन्होंने कुछ मंत्र कह दिये और चालू हो गया हमारा सारा पूजन-पाठ कि, 'भाई हो गया हमारा सारा, पूजन-पाठ सारा कुछ हमारा विधि हो गया है और हमने देवीजी को भी प्रसन्न कर दिया है।'

ऐसी ही भावनाओं के कारण हम अपने धर्म के कोई से भी विचार से किसी भी तरह से, तदरूख हैं। अब पाश्चिमात्य देशों में, जहाँ पर के लोग काफ़ी बढ़ चुके, सारी दुनिया भर की उन्होंने सत्ता कमा ली, सम्पदा कमा ली। जिनके पास हर तरह की सामग्री जुट गयी है। जो कुछ भी हो सकता था मटेरिअलिज्म का छोर वो उन्होंने पा

लिया। अब वो लोग मुड़ कर के ये कहते हैं, कि भाई, हम जिस आनन्द को खोजने के लिये ये सब करते रहे, वो आनन्द कहाँ खो गया है? उस आनन्द की उपलब्धी हमें तो हुई नहीं, तो ये सब चीज़ें छोड़ो यार, इसमें कोई आनन्द ही नहीं है। ये कुछ तो भी भुलैया है, जिसमें हम भूल गये हैं। इसको छोड़ दो। उनके बच्चों ने इसे छोड़ दिया है। सब कुछ छोड़-छाड़ के अपने बाल-बच्चे छोड़ कर, अब देखिये सन्यासियों का वेश लेकर के वो गांजा-वांजा पीने लगे। अब ये भी कोई तरीका हुआ? आप देख रहे हैं, हजारों यहाँ घूम रहे हैं साधू बन कर! वो गांजा भी पीते हैं और सोचते हैं कि गांजा पीने से उनको भगवान मिलेगा, ऐसे समय में सहजयोग उपलब्ध हुआ है। इसके लिये खोजना बाहर नहीं है, अन्दर है। अनेक बार बड़े-बड़े कवियों ने कहा है, राजा जनक के अवतरण नानकजी थे और नानक जी ने कहा है, 'काहे बन खोजन जाये, सदा निवासी सदा....' कि तेरे ही अन्दर समाया हुआ है, 'तु काहे इसे खोजने बाहर जाये?' वो तेरे ही अन्दर आत्मस्वरूप है। तु इसको कहाँ बाहर खोजने जा रहा है। अब वो चीज़ क्या है? वो कौन है? कैसा है, इसी के बारे में मैं आपको बताऊँगी।

हमारे अन्दर, शरीर में एक व्यवस्था है, जिसे अंग्रेजी में ऑटोनोमस नर्वस सिस्टीम कहते हैं, जिसे कि हम लोग स्वयंचालित संस्था कहते हैं। ये संस्था हमारे अन्दर तीन प्रकार से स्थित है, जिसे कि हम डॉक्टर लोग इसे लेफ्ट और राइट सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम और पैरा-सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम के नाम से जानते हैं। हमारे सहजयोग के शास्त्र के अनुसार ये तीनों ही संस्था जड़ हैं, बाहर दिखने वाली क्रोश हैं। और इनको चालना देने वाली संस्थाएँ हमारे रीढ़ की हड्डी में स्थित है। जैसे कि यहाँ पर मैंने आपको दिखाया हुआ है, ये तीन लाईने हैं। आप देख लीजिये, ये तीन नाड़ियाँ हैं। इसे एक को ईड़ा, दूसरी वाली को पिंगला और बीच वाली नाड़ी को सुषुम्ना कहते हैं। अब ये तीन नाड़ियाँ हैं या नहीं, वो हमारे अन्दर स्थित हैं या नहीं, सूक्ष्म रूप से यही कार्यान्वित है या नहीं क्योंकि सिम्पथेटिक और पैरा-सिम्पथेटिक तो आप देख सकते हैं। इस सूक्ष्म नाड़ियों को आप देख नहीं सकते। उसका भी साक्षात सहजयोग से ही होता है। लेकिन पहले किसी भी सूक्ष्म चीज़ को देखने के लिये आपको भी सूक्ष्म होना पड़ता है। ये तो निर्विवाद है। बगैर सूक्ष्म हुये आप सूक्ष्म चीज़ को कैसे जानेंगे, देखेंगे भी। तो भी जैसी आप आपकी आँखें हैं जैसे कि आप मनुष्य अभिमनुष्य के स्तर पर हैं, आपको कुण्डलिनी का स्पंदन हम दिखा सकते हैं। आप कुण्डलिनी का चलना देख सकते हैं, कुण्डलिनी का उठना आप देख सकते हैं। कोई भी आदमी हो वो, चाहे वो पार हो, चाहे वो नहीं हो।

अपने शरीर में ये जो सूक्ष्म व्यवस्था की गयी है, ये तीन शक्तियाँ हमारे अन्दर वास करती हैं। जो शक्ति राईट साइड से गुजर कर लेफ्ट साइड को चली आती है उस शक्ति का नाम है महाकाली शक्ति। अब आपको ये नाम अजीब सा लगेगा कि माताजी, महाकाली कैसे कह रही हैं। अंग्रेजी लोगों ने तो इसका पता नहीं लगाया है, तो इसका अंग्रेजी नाम मैं क्या बताऊँ। यही महाकाली शक्ति है, जिसके कारण सारे संसार की स्थिति होती है, एक्झिस्टेंस होता है। इसी के कारण सारे संसार का प्रलय होता है, सर्वनाश होता है। जैसे कि कोई चीज़ किसी वजह से स्थित है, जैसे अपना हृदय के कारण हम लोग जीवित हैं। तो जब हृदय बंद हो जाये हम मृत भी हो सकते हैं। यह शक्ति हमारे हृदय को प्लावित करती है। इसका नाम है महाकाली शक्ति। और ये मनुष्य की इमोशनल साइड

है। जिसको हम अंग्रेजी लोग जिसे 'साईकि' कहते हैं। वो 'साईकि' का चैनल वो इस लेफ्ट हैंड साइड के सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम से होता है, पर डॉक्टर लोग इसको नहीं मानेंगे। वो तो राइट और लेफ्ट को एक ही समझते हैं। माने डॉक्टर और सायकॉलॉजी, दोनों आपस में भी नहीं मानते हैं। ये मेरा, ये मेरा उनसे झगड़ा ऐसे ही नहीं है, पर उनका आपस में भी बहुत झगड़ा है। ये सायकोलोजिस्ट जो है, वो डॉक्टर को नहीं समझा पाता और डॉक्टर सायकोलोजिस्ट को नहीं समझा पाता है। मनुष्य सायकोलोजी भी है, साईकि भी है और मनुष्य शरीर भी है, उसका इमोशन भी है, उसका माईंड भी है, वो सबकुछ है। सहजयोग मनुष्य को, जैसा वह सम्पूर्ण है। इस तरह से वो इसके बारे में पता लगाता है। अलग-अलग भिन्न-भिन्न एनलाइज़ कर के नहीं लगाता है, जैसे कि साईंस है, पर साईंस के हर एक बात पर वह ठीक बैठता है। इस नाड़ी को कि जो लेफ्ट हैंड साइड में है, इसे हम लोग महाकाली की शक्ति कहते हैं, जिससे हमारा सारा कार्य होता है। इस शक्ति से मनुष्य की स्थिति होती है। सारे संसार की स्थिति इसी शक्ति के कारण होती है। यह शक्ति न हो तो मनुष्य की स्थिति ही नहीं बन सकती है, उसका एक्सिस्टन्स ही नहीं बन सकता। लेकिन ये समझ लीजिए कि यह परमात्मा की इमोशनल स्थिति है। ये कार्यान्वित नहीं है, ये स्थिति है। हमारे अन्दर ये शक्ति जब कार्यान्वित होती है, तो हमारे अन्दर जो भी कुछ मर जाता है, जो भी विचार हमारे अन्दर आ कर, उठ कर खतम हो जाते हैं। जो भी कुछ हमारा भूत है, पास्ट है, वो सारा ही इससे संचालित होता है। ये उसी को स्टोअर करती रहती है। जितना भी हमारे अन्दर कंडिशनिंग होता है, वो इसी से अन्दर स्टोअर्ड रहता है, रेकॉर्डेड रहता है। इसे हम महाकाली की शक्ति को जैसे मानते हैं।

और दूसरी शक्ति, जो हमारे लेफ्ट से गुजर कर राइट को आ जाती है, उसे हम महासरस्वती कहते हैं। महासरस्वती की शक्ति से हमारा सारा कार्य होता है। क्रियेशन सारा थिंकिंग होता है, हाथ-पैर चलना है, जो कुछ भी हम काम करते हैं आगे के लिये, फ्यूचर के लिये, जो भी हम प्लेनिंग करते हैं, जो भी हम विचार करते हैं आगे के लिये ये सब हमारा जो राइट हैंड की जो शक्ति है, जिसे कि हम महासरस्वती कहते हैं, इससे होता है।

इसके बीच में, बीचो-बीच जो शक्ति है, इसे महालक्ष्मी की शक्ति कहते हैं। इस शक्ति के कारण हमारा उत्थान होता है। हमारी उत्क्रांति होती है, इवोल्यूशन होता है। आज जो हम अमीबा से इन्सान बने हैं, वो इसी शक्ति से बने हैं। मनुष्य का जो आज स्वरूप है, वो भी आज इसी शक्ति के कारण है। ये शक्ति सब वस्तुओं में उसका धर्म स्थापित करती है। धर्म का मतलब होता है, आप लोग घबरायेगा नहीं, धर्म का मतलब होता है, अपने अन्दर का धर्म। जैसे कि ये एक सोने का धर्म है, कि ये खराब नहीं होता है। कार्बन में चार वेलेन्सीस होते हैं। हर एक अणु-रेणु में उसका धर्म होता है, बिच्छू, बिच्छू जैसे होता है, साँप, साँप के जैसे होता है। इसी प्रकार मनुष्य, मनुष्य जैसे होता है। मनुष्य का धर्म भी इसी शक्ति से स्थापित होता है। और धर्म की स्थापना करने से ही मनुष्य आज इस दशा पर आ गया है। अलग-अलग मनुष्य के धर्म हैं, क्वालिटीज हैं। वो उसमें आते-जाते हैं। और जब इस धर्म की स्थापना हो जाती है, इन दस धर्मों की, तब ये मनुष्य की निर्मिती हो जाती है। इस महालक्ष्मी की शक्ति के कारण मनुष्य उस दशा में भी जा सकता है, जहाँ उसे पहुँचना होता है, जिसे कि इवोल्यूशनरी शक्ति कहते हैं। ये आपका प्रेज़ेंट (वर्तमान) है। इस प्रकार आप के अन्दर तीनों काल स्थित है। एक भूतकाल-पास्ट, एक भविष्यकाल-फ्यूचर और एक ये समय-प्रेज़ेंट, अभी, आज इस वक्त इस क्षण। इस प्रकार की तीनों शक्तियाँ हमारे अन्दर हैं। और

इन तीनों शक्तियों के कारण ही आज मनुष्य इस दशा में पहुँचा है, जहाँ वो आज है।

अब जबकि हम जानते हैं ये इसको बनाया गया है या कोई भी यंत्र बनाया गया है। अब जब कि हम जानते हैं, जैसे कि ये माईक है, इसको बनाया गया है या कोई भी यंत्र को बनाया गया है, तो हमें समझ नहीं आता कि इसका क्या उपयोग है। जब तक हम इसको निकाल करके मेन के कोयर्स को नहीं लगा देते हैं। तब तक इसका कोई भी उपयोग नहीं होगा। उसी प्रकार मनुष्य भी जब तक उसके मेन से जाकर के नहीं लगता है, तब तक उसका कोई अर्थ नहीं लग सकता है। उसके बाद एक ही अर्थ इसका भी लगा है, कि मेरी जो आवाज़ है, वो इसके अन्दर से बननी चाहिये। एक ही हॉलो चीज़ हो जाती है। ये इन्स्ट्रुमेंट इसलिये बनाया गया है, कि ये मेरी आवाज़ को गहन कर सके, बाद में ये पता होता है कि हम भी एक हॉलो चीज़ हो जाते हैं। और हमारे अन्दर से वो शक्ति बहने लग जाती है। हमारे अन्दर से वो चैतन्य की लहरियाँ बन कर के हाथों से बहने लग जाती है। जिसे हम सर्वव्यापी परमात्मा की शक्ति मानते हैं और वो शक्ति प्रेम की शक्ति है। जो ये तीनों ही शक्तियों से परे सारे ही शक्तियों को ले कर के एक साथ बह रही है। उसमें तीनों ही शक्तियाँ होती है। अब अगर इसी चित्र को परमात्मा की ओर देखें कि हम अगर परमात्मा के प्रतिबिम्ब रूप हैं, तो परमात्मा में इसी प्रकार उनमें भी ये तीनों शक्तियाँ संचलित हैं। और जैसे कि इसी के अन्दर के कोई छोटे-छोटे सेल्स हम लोग बने हुए हैं। जैसे कि ये मॉक्रोकोसम है, तो हम मायक्रोकोसम हैं। इस तरह से एक हम भी इन्हीं के जैसे इनके अन्दर बने हुए इन्ही के जैसे, अन्दर में बैठे हुए हैं। और हम को भी सिर्फ जागृत होना है, ताकि हमारे अन्दर से परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति बहे। जब तक ये नहीं होगा तब तक आपको आनन्द मिल नहीं पायेगा। जब तक ये गति नहीं आयेगी आप अपने जीवन का लक्ष्य समझ नहीं पायेंगे। आप चाहे दुनिया की कोई भी चीज़ पा ले, आपको सुख नहीं मिल सकता। आप आनन्द में नहीं आ सकते।

आप अभी अपने सामने देख रहे हैं। इसमें हमने अनेक चक्र दिखाये हैं और इन चक्रों से ही गुजर कर के कुण्डलिनी ऊपर की ओर आती है। अभी इन सात चक्रों का मैं आपको वर्णन करती हूँ। अभी आप लोग इस पर शंका करते न बैठे कि ये है या नहीं या माताजी यूँ ही बातें करते बैठी है। अगर आप एक साईंटिस्ट भी हो चाहे तो भी साईंटिस्ट का मस्तिष्क उसकी बुद्धि खुली होनी चाहिये। ये एक हम हायपोथिसिस आपके सामने रख रहे हैं। उसे आप स्वीकार करें, उसे आप देखें और अगर वो घटित हो और वो अगर फलीभूत हो और उसका अगर साक्षात हो तब उसे आप मान लें। हमारे अन्दर ये सूक्ष्म सा चक्र हैं, वो बाहर जरूर दिखाई देते हैं और उनको डॉक्टर लोग प्लेक्सेस के नाम से जानते हैं। साथ-साथ में मैं उनका भी नाम बताऊंगी जो कि सूक्ष्म के प्रादुर्भाव से (मॅनिफिस्टेशन से) बाहर एक ग्रॉस झड प्लेक्सेस के रूप में वर्तमान है कि जिसे लोग देख सकते हैं और समझ सकते हैं कि हमारे अन्दर ऐसी कोई संस्थायें हैं, कि जिससे हमारा कोई ताल्लुक नहीं है, जैसे कि आपका हृदय चल रहा है, वो अपने आप से चल रहा है। आपकी पेट की गति अपने आप से चल रही है। आपके श्वास अपने आप से चल रहे हैं। बहुत से अनेक कार्य स्वयंचालित हो रहे हैं। उसमें से भी अगर आपको अपनी हृदय की गति बढ़ानी है तो आप बढ़ा सकते हैं। अगर आप दौड़ना शुरू कर देंगे तो आपकी हृदय की गति बढ़ जायेगी, लेकिन वो घटती अपने आप से हैं, उसको आप घटा नहीं सकते। अब श्वास की गति भी आप बढ़ा सकते हैं, घटा नहीं सकते। ये जो घटाने की क्रिया है ये भी स्वयंचालित है। एक तो जो कि आप बढ़ा सकते हैं, जिसको आप एमरजेंसी



में उपयोग में ला सकते हैं, जिसको आप हथिया सकते हैं, वो संस्था है सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम और वो है कि जिस पर आप कुछ भी नहीं कर सकते हैं, वो है पैरासिम्पथेटिक सिस्टम। और सिम्पथेटिक कि आप से जैसे मैंने कहा, कि ईड़ा और पिंगला नाड़ी से चलित है। पैरासिम्पथेटिक से बीच की संस्था जिसे कि हम सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं, उससे चालित है।

अब इन तीनों नाड़ियों से प्लावित अपने अन्दर कुछ सेंटर्स हैं। इन सेंटर्स में अनेक देवतायें बिठाये गये हैं। अब बहुत से लोग कहेंगे कि माताजी, देवताओं की बात मत करिये, साइंटिफिक बातें करिये। लेकिन साईंस के लोग क्या सभी चीज़ों का जवाब दे सके हैं। एक छोटा सा सवाल अगर आप पूछिये, डॉक्टर से जा कर पूछिये, कि हमारे शरीर में जब कोई भी वस्तु बाहर की आती है, तो उसको हमारा शरीर फेंक देता है उठा कर के। वो पूरी कोशिश करता है, कि उसे इस शरीर से फेंक दिया जाये। लेकिन जब हमारे पेट में या कहना चाहिये कि जब माँ के गर्भ में बच्चा रह जाता है, तब उसे कोई फेंकता तो नहीं। नहीं फेंकते हैं, लेकिन उसका संवरण करते हैं, उसको बड़ा करते हैं। क्यों? ये कौन करता है? इसका निर्णय कौन लेता है? ये सारा कहाँ से आ जाता है? कोई इसको सोचता है? ये कैसे हो जाता है कि जब कोई शिशु माँ के पेट में आ जाता है, तो उसका संवरण शुरू हो जाता है। बजाय इसके कि इसको निकाल कर फेंक दिया जाये। ऐसे अनेक प्रश्न हैं। जिसका कि डॉक्टर उत्तर नहीं दे सकते हैं। Acetylcholine और adraneline नाम के दो केमिकल्स हैं। जब वो हमारे शरीर में प्रवेश करती हैं और या जब हमारे शरीर में कार्यान्वित होती हैं तो उनके एक्शन अलग पड़ते हैं। जैसे कि जहाँ रिलेक्स करना हो, वो वहाँ अँगमेन्ट कर देती हैं। उसको छोटा कर लेती है, खींच लेती है। डॉक्टर लोग कहते हैं, कि ये हम नहीं बता सकते, We cannot explain the mode of action of these। बहुत सी बातों में ऐसा ही जवाब होता है, कि We cannot explain। ठीक है, उनका कहना, उनका कहना भी सत्य है और इसमें एक बड़ी भारी एक सच्चाई है, कि वो कम से कम सच्चाई कहते हैं। लेकिन इन लोगों की खोज क्योंकि बाहर से है, अंधेरे में से है, आप जब तक जगते नहीं हैं, अपने आप से, तो आप को कुछ पूरी चीज़ ठीक से दिखाई नहीं देती है। एक चीज़ मिल गयी, दूसरी चीज़ मिल गयी। उसका कोई कनेक्शन नहीं बन पाता, फिर आप एक ही चीज़ लेकर उसका विश्लेषण करते हैं, अँनेलिसिस करते हैं, तो आप उस जगह जाकर पहुँचते हैं, जहाँ पूरी चीज़ सम्यक है, उसको आप भूल जाते हैं। आप जानते हैं, कि एक डॉक्टर एक आँख को देखेगा, दूसरा डॉक्टर दूसरी आँख को देखेगा और अगर आप को पूरे शरीर को इग्जैम्प्लिन करना है तो कम से कम सात डॉक्टरों के यहाँ जेब गरम करनी पड़ती है।

जब मनुष्य एक ही है, तो उसकी कला, उसका संगीत ये सब कहाँ से आती है! इसका किसी को कोई अंदाज नहीं है। क्योंकि जब आदमी बाहर से खोजता है, तब ऐसा ही होता है, लेकिन एक बात हो सकती है, कि अगर एक अंधेरे से कमरे में एकदम से अगर प्रकाश हो जाये तो सभी कुछ एकदम से जाना जा सकता है। यही हमारा सहजयोग है। हमारे अन्दर स्थित सबसे नीचे त्रिकोणाकार अस्थि में आप देखेंगे, एक साढ़े तीन सर्कल में, लपेट में कुण्डलिनी नाम की एक शक्ति है। ये है कि नहीं, ये मैंने आपको पहले ही बताया है और इसका साक्षात् मैं आपको बाद में दूँगी।

ये शक्ति सुप्तावस्था में होती है, ये तब तक सुप्तावस्था में रहती है जब तक इसका कोई अधिकारी समाने नहीं

आता। इसका अधिकारी करिबन होता ही नहीं है। कम से कम मुझे तो कोई मिला ही नहीं, जब से जन्मी हूँ, तब से मुझे तो कोई मिला नहीं है, कम से कम इस जनम में तो मुझे कोई मिला ही नहीं है। कुछ लोग हैं संसार में जरूर, जिन्हें कि मैं कह सकती हूँ, कि पार हो चुके हैं, लेकिन वो कोई भी, एक भी इस संसार में नहीं विचरते हैं। सब लोग जंगलों में बैठे हैं। बहुत ही कम, एकाद ही। वो ही जब सामने आ जाता है, उसका तब साक्षात्कार होता है, क्योंकि ये चेतना है, अवेअरनेस है, ये सोचती है, समझती है, ऑर्गनाइज करती है। हम किसी शक्ति को ये नहीं समझ सकते कि जो सोचती है, समझती है, को-ऑर्डिनेट करती है और प्यार करती है। ऐसी किसी भी शक्ति को हम नहीं समझ सकते पर जब हम ये सब कर सकते हैं, तो कोई न कोई शक्ति इसका स्रोत तो होगा ही। आखिर हम किस तरह से ये सब कार्य करते हैं। जो चीज़ पेड़ में नहीं होगी, वो फल में कहाँ से आयेगी? इसका स्रोत कहीं न कहीं तो होगा। इसकी ये शक्ति कहीं न कहीं तो विराजमान होगी, जिससे कि हम लोग प्यार करते हैं, सोचते हैं और सारे कार्य कर सकते हैं।

उसी शक्ति का अंशमात्र आपके अन्दर, हर एक के अन्दर इसी तरह से बीच वाली सुषुम्ना नाड़ी से अन्दर उतरता है और यहाँ पर इस साढ़े तीन कुण्डलों में लपेट में इसका भी बड़ा भारी शास्त्र है, गणित है। .....अपने अन्दर स्थित है, बड़ी सुन्दर व्यवस्था है इसकी। और वो सुप्त रहती है। अब बहुत से लोग कहते हैं कि हम कुण्डलिनी जागरण करते हैं। ऐसे बहुत सारे मिलते हैं लोग। बहुतों ने तो किताबें भी लिख डाली। वो किताबे पढ़ कर अगर आप आओगे तो पहले तो आप बहुत ही घबरायेंगे कि माताजी, कुण्डलिनी तो बहुत भयंकर चीज़ होती है। अरे, वो तो आपकी माँ है, आपकी माँ कभी भयंकर हो सकती है? सारी दुनिया भी भयंकर हो जाये, पर आपकी माँ तो नहीं हो सकती है। वो आप की अलग-अलग सब की माँ है। आप ही के साथ हर जन्म-जन्म में पैदा होती है। जिस माँ ने आपको जन्म दिया है, वो बदल सकती है, पर वो नहीं बदलती। ये कुण्डलिनी आप ही के साथ भ्रमण करती रहती है, आप ही के साथ रहती है। बार-बार आप ही के अन्दर में स्थित रहती है, आप ही को जानती है, आपकी सब गलतियाँ भी जानती है। आपके सारे पुण्य भी जानती हैं, आपके सारे कर्मों से परिचित है, वो क्या आपके साथ कुछ बुराई कर सकती है? कैसे कर सकती है? लेकिन जो उसका अधिकारी नहीं है, वो ही ऐसी सब गंदी बातें लिखते हैं।

कुण्डलिनी के नीचे आप अगर देखें तो चार दिलों का एक सेंटर है। कुण्डलिनी जहाँ स्थित है, उसे मूलाधार कहते हैं, क्योंकि मूल का आधार वहाँ है उसका abode, उसका घर और उस घर के बाहर, नीचे, काफ़ी नीचे दूसरा एक सेंटर है, जिसे कि मूलाधार चक्र कहते हैं। अब ये बड़ा भारी अंतर है, मूलाधार और मूलाधार चक्र में, मूलाधार चक्र नीचे में स्थित है और मूलाधार ऊपर में। मूलाधार में आपकी माँ कुण्डलिनी गौरी स्वरूप में बैठी है। गौरी नहा रही है और नीचे में गणेशजी उसकी रक्षा कर रहे हैं। इस पहले सेंटर के अन्दर श्रीगणेश बैठे हैं। अब कोई कहेंगे कि, 'माताजी, श्री गणेश आप कहाँ से ले आये हैं?' श्रीगणेश साक्षात् वहाँ हैं या नहीं ये तो बाद में देखा जायेगा। श्रीगणेश एक प्रतीक हैं।

श्रीगणेश प्रतीक हैं। चिरकाल के बालक हैं। श्रीगणेश चिरकाल के बालक हैं। अपने अन्दर अनेक प्रतीक हैं, ये सायकोलोजिस्ट्स मानते हैं। यूं इन्होंने काफ़ी मेहनत करी है। वो कहते हैं, हमारे यहाँ कोई ऐसी



युनिवर्सल, अनकांशियस, सर्वव्यापी ऐसी अचेतन शक्ति है, कि जो हमारे अन्दर प्रतीक भेजती है। मेडिटेशन की इतनी शक्ति इन लोगों की नहीं थी और अगर होती तो वो भी देखते, लेकिन ध्यान में जाने की जिसकी शक्ति हो जाये वो देख सकता है, कि इस जगह श्रीगणेश का साक्षात है और वो है कि नहीं, वो हम कुण्डलिनी की योग में जब हम आगे बढ़ेंगे तब हम दिखायेंगे। अब यहाँ जितने भी पार लोग हैं, उन्होंने इसे जाना है। आप लोगों ने अभी जाना नहीं है, आप भी जान जाओगे।

श्रीगणेश का यहाँ स्थान है। इस चक्र में श्रीगणेश इसलिये बैठाये गये हैं, कि जब आप चाहते हैं कि, अपनी माँ गौरी जागृत हो, तो आपके मन में माँ के प्रति जैसे कि एक बालक में इनोसेन्स होता है या अबोधिता होती है, सेक्स के मामले में होनी चाहिये। क्योंकि श्रीगणेश इस चार पंखुड़ी के चक्र पर बैठे हुए हैं, इसी चक्र से सेक्स भी करते हैं। वो कोई रास्ता नहीं है परमात्मा की ओर जाने का, बिल्कुल भी नहीं है। उल्टे अगर उस रास्ते से कोई गुजरने की कोशिश करता है, तो श्रीगणेश क्रोधित हो जाते हैं। क्या आप अपनी माँ से सेक्स कर सकते हैं? जो लोग सेक्स की ऐसी बातें करते हैं वो आपको यही सिखा रहे हैं कि आप अपनी माँ के साथ सेक्स करो। हिन्दुस्तानी आदमी इसे अच्छी तरह से समझ सकता है, कि इससे बढ़ कर और कोई कुकर्म, पाप, शापित चीज़ नहीं हो सकती है।

मूलाधार चक्र पर श्रीगणेश अपनी माँ की लज्जा का रक्षण कर रहे हैं। लेकिन अपने यहाँ बहुत से ऐसे निकल आये हैं, नये-नये और वो इस तरह की गंदी बातें फैला रहे हैं कि आप अपने सेक्स को सबलीमेट करें। आप पहले ही सबलीमेटेड हैं देखिये आप! आप का मूलाधार चक्र नीचे में है और ऊपर कुण्डलिनी बैठी हुई हैं। और इस तरह के कार्य करने की वजह से ही जो आपके अन्दर जो गर्मी पहुँचती है ये श्रीगणेश का गुस्सा है, वो आप पर गुस्सा हो जाते हैं और उनके गुस्से के कारण ही कुण्डलिनी ताड़ित हो जाती है। कुण्डलिनी कुछ नहीं, जहाँ-तहाँ बैठी हुई है, वो हिलती नहीं है, वो तो श्रीगणेश का गुस्सा है, जिसके कारण कुण्डलिनी से परे, कुण्डलिनी का कोई उसमें हात न होते हुए भी सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टम पर आघात आता है और आपके अन्दर अनेक तरह की व्याधायें तैयार होती हैं। कोई लोग होते हैं, उनके ऊपर सारे ब्लिस्टर्स आ जाते हैं। मैंने देखे हैं, मेरे पास इन रोगों के मारे हुए लोग आते हैं, जिन्हें ठीक करना पड़ता है। सारे बदन पर भी ब्लिस्टर्स आ जाते हैं। इतने गणेश जी गुस्सा हो जाते हैं। बहुत से लोगों के हाथ पैर सूझने लग जाते हैं। कोई तो चीखने लगते हैं, चिल्लाने लगते हैं। कोई अपने कपड़े उतार देते हैं, कोई नशे में हो जाते हैं, कोई बकने लगते हैं। किसी को कहीं लाइट-वाइट दिखने लग जाता है, दुनिया भर की चीज़ें हो जाती हैं।

एक जगह अभी मैं गयी थी, कोल्हापूर में, तो वहाँ एक आदमी मेरे तरह पैर ऐसे कर के बैठ गया। सब ने कहा, कि भाई ऐसे माताजी के सामने पैर करके मत बैठो तो वो कहने लगा कि ऐसे ही बैठने दो वरना मैं तो मेंढक के जैसे कूदता हूँ। उन्होंने पूछा कि, 'भाई, मेंढक के जैसे क्यों कूदते हो?' तो कहने लगे कि, 'मेरे गुरु ने मेरी कुण्डलिनी उठा दी है, जिसकी वजह से मैं एक मेंढक के जैसे कूदता हूँ।'

आपके लाभ के लिये और आप के सुख के लिये जो चीज़ है, आनंद के लिये जो चीज़ है, उसका इस तरह भी पर्यास, इस कदर उसका अनादर और क्या हो सकता है। कोई भी इसमें ऐसे सिम्पटम्स नहीं होने चाहिये। हाँ, ये जरूर है, पर आपकी तबियत नहीं ठीक है। हो सकता है, आपकी कुण्डलिनी थोड़ी सी उठ कर के किसी जगह तक

चली जाये और वहाँ रुक जाये जहाँ आपको तकलीफ हो, एक दो दिन वहाँ रुक जायेगी। हो सकता है, कि थोड़ी सी आपके अन्दर गर्मी सी आ जाये आपके बदन में। या हो सकता है कि यहाँ एक साहब थे, जिन्हें कुछ स्प्लीन की शिकायत थी और उनका एक अंगूठा ऐसे-ऐसे हिलने लग गया था, बस, ज्यादा कुछ नहीं क्योंकि इंडिकेशनस भी आने चाहिये। जब ये कुण्डलिनी जागृत हो जाती है और इन सारे चक्रों को षट्चक्र कहते हैं क्योंकि सातवा चक्र जो है, उसको तो छेदना नहीं होता है, उससे तो ये ऊपर ही है इसलिये इसे षट्चक्र भेदन कहते हैं।

तो देखिये कि, कितनी बड़ी साक्षात बात है, कि सातवा चक्र, मूलाधार जो है उसको छेदा नहीं जाता है। इसलिये उसकी बात ही नहीं करनी चाहिये कुण्डलिनी के वक्त। हाँ, ये जरूर है, कि अगर आप अपवित्र आदमी हैं, आपने अपने गणेश जी की जरा भी परवाह नहीं करी, तो ये जरूर होता है, कि आपके अन्दर वैक्यूम क्रियेट हो जाता है। और जब भी कुण्डलिनी उठती है, तो फिर से नीचे फट से आ जाती है, ऐसा हो सकता है, वो दूसरी बात है, अगर आपने गणेश की परवाह नहीं की है ज्यादा, तो हाँ, ये हो सकता है। तो भी बहुत माफ़ी हो जाती है सहजयोग में, मैंने देखा है। बहुत से लोग अगर इस तरह से रहे भी हैं तो भी उन्हें माफ़ी हो जाती है। बहुत जरूरी है, कि जब आप परमात्मा के सामने आये हैं और आप अगर चाहते हैं कि आपको उनका आशीर्वाद मिले तो आप अपनी पवित्रता को भी आंकिये कि क्या हम में ये पवित्रता है? क्या हम माँ बहन कुछ चीज़ समझते हैं या नहीं। ये बहुत जरूरी है।

मूलाधार चक्र बिगड़ जाने से ही अनेक सेक्स के जो भी प्रॉब्लेम्स जो होते हैं, वो हो जाते हैं। जैसे कि ये कॉन्स्टिपेशन वगैरे जैसे चीज़ें हैं, वो भी हो सकती हैं क्योंकि ये बिल्कुल गुदा के नीचे में ये चक्र है।

उसके ऊपर आप देखते हैं, बरोबर पेट के बीचो-बीच में ये, जिसे कि हम नाभि कहते हैं, नाभि चक्र। इसे लोग मणिपूर चक्र भी कहते हैं। नाभि चक्र या मणिपूर चक्र। मणिपूर चक्र बराबर नाभि के पीछे रीढ़ की हड्डी में इस जगह पर है और इससे जो प्लेक्सस चलता है उसे सोलार प्लेक्सस कहते हैं अंग्रेजी में। ये चक्र आपके पीठ के रीढ़ के हड्डी में रहता है लेकिन प्लेक्सस तो समाने होता है। वो पीठ के रीढ़ के हड्डी के बाहर होता है, प्लेक्सस है, ये ग्रॉस है। और जो सूक्ष्म चक्र है, वो आपके हड्डी के अन्दर होता है, स्पायनल कॉर्ड के अन्दर जिसको कि हम मेड्यूला अबलॉगेटा कहते हैं। उसके अन्दर होता है। तो ये जो चक्र है, जो सोलार प्लेक्सेस हैं, इसी से हमारे सारे जो भी पेट के जितने भी सारे ऑर्गन्स हैं, वो चलते हैं।

इसके अलावा एक चक्र आप देखते हैं, जो कि इसी चक्र से निकल कर चारों तरफ घूमता है, इसे स्वाधिष्ठान चक्र कहते हैं और इस चक्र में छः पंखुडियाँ होते हैं। इसमें श्रीब्रह्मदेव का वास है श्रीसरस्वती उनकी शक्ति है, जो नाभि चक्र है, उसमें श्रीविष्णु का वास है और लक्ष्मी जी उनकी शक्ति है। अब समझ लीजिये कि कोई आदमी जरूरत से ज्यादा गरीब है, हो सकता है, कि उसकी नाभि चक्र खराब हो। अपने देश का नाभि चक्र ही खराब है, इसलिये यहाँ गरीबी है, ज्यादा है। आप लक्ष्मी जी की अनेक पूजा कर लीजिए, दुनियाभर की आप पूजा कर लीजिये लेकिन आपको फायदा नहीं होगा। जब तक आप का नाभि चक्र ठीक नहीं होगा, आपकी हालत ठीक नहीं होगी। लेकिन लक्ष्मीजी का मतलब पैसे वाला नहीं होता है, ये आप बार-बार अनेक बार ये बात अच्छे से समझ

लीजिये। आज तो मैं इन दो चक्रों के बारे में बता कर के ध्यान करवाऊंगी और बाकी का मैं कल बताऊंगी। अभी मैं आपको लक्ष्मी जी और सरस्वती जी के बारे में बताऊंगी।

ये कल्पना नहीं है, ये साक्षात है, ये वास्तविक है, क्योंकि नाभि चक्र जो है, वो धर्म की स्थापना करता है। मनुष्य के दस धर्म हैं और वो होने भी चाहिये। अगर मनुष्य के दस धर्मों में से वो छूट जाता है तो वो फिर सहजयोग के लिये उपयोगी नहीं है। उसे धर्म बाँधने पड़ते हैं। उसकी जागृती नहीं हो। ये जो दस धर्म हैं, ये हमारे अन्दर मिनिमम होने चाहिये। जब ये होते हैं तभी आदमी धर्मातीत हो जाते हैं। लक्ष्मीजी एक स्त्री स्वरूप में दिखाई देती हैं। स्त्री स्वरूप का मतलब है, कि माता का हृदयी होना चाहिये। जिस आदमी के पास पैसे हो, लक्ष्मीपति उसे कहना चाहिये जो स्वयं अत्यंत सहृदयी हो और जिसके अन्दर मातृत्व हो सब के प्रती। दूसरे, लक्ष्मीजी एक कमल पर खड़ी हुई हैं। अर्थात् जिस आदमी के पास, कि जिसे कहना चाहिये, कि जो लक्ष्मीपति है, उसमें इतना हलकापन होना चाहिये अपने बारे में, इतनी सादगी होनी चाहिये, कि वो एक कमल पर भी खड़ा हो सकता है। हम देखते हैं, कि जरा सा भी अगर किसी के पास पैसा हो जाता है तो उनको इतना घमंड होता है कि वो मुझसे कहेगा कि, 'माताजी, देखो मेरे को पार तो होने का है, लेकिन मैं सब के बीच में वहाँ आपके हॉल में नहीं आ सकता। आप को मेरे घर आना पड़ेगा।' मैंने कहा कि, 'क्यों? क्योंकि आपके पास थोड़ा पैसा ज्यादा हो गया है?' तो कहने लगे कि, 'वे सब के साथ नहीं बैठ सकते।' ऐसे आदमी में जरा सा भी घमंड नहीं होना चाहिये। इतना सा भी घमंड नहीं होना चाहिये। तभी वो लक्ष्मीपति कहलायेंगे। गर उसको पैसों का घमंड हुआ तो फिर वो बरबाद हो जायेगा। फिर वो क्या पैसे वाला हुआ? अगर वो असली पैसे वाला है, जिसके पास अपने ही चीजें होती हैं उसे कभी किसी चीज का घमंड ही नहीं होता है। किसी दूसरे के मारी हुई चीज होगी, तभी वो घमंड करता है या उसके पास अभी बहुत कमी है। इसलिये वह घमंडी होता होगा। क्या हम लोग अपने नाक, आँख, कान का कभी घमंड करते फिरते हैं? उसके दोनों हाथों में, लक्ष्मीजी के दोनों हाथों में कमल होते हैं, गुलाबी रंग के। गुलाबी रंग के कमल खिले हुए हैं। मतलब ये है, कि जो लक्ष्मीपति होगा उसका हृदय इन कमलों के जैसा खुला हुआ होगा। खुले दिल का आदमी होना चाहिये। कोई आया, उसपे भौंकने लग जाये वो लक्ष्मीपति कैसा? वो तो कुत्ता हुआ। वो लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। कमल के जैसे जिसकी सुरभि सारे संसार में फैली हुई है। पता हो कि एक लक्ष्मीपति यहाँ रहते हैं।

मैं जहाँ पैदा हुई थी वहाँ एक थे, जिनको लोग कहते थे, जी लक्ष्मीनारायण कह कर, बड़े रईस आदमी थे। उनको आप लक्ष्मीपति कह सकते हैं। अत्यंत निगर्वी आदमी थे वे, और बच्चों जैसा उनका स्वभाव था। ऐसे अनेक-अनेक देखे मैंने बहुत कम। बहुत कम ऐसे देखे हैं मैंने। और कमल के जैसे उनका घर होना चाहिये, सुंदर, गुलाबी, जिसमें हृदय की गुलाबीपन हो हृदय का खिंचाव हो। लोगों का स्वीकार्य हो। सब का वहाँ आना हो। भँवरे जैसे प्राणी को भी कमल अपने यहाँ स्थान देते हैं। और उसको कम्फर्टेबल और आराम से सुलाते हैं। एक कोझीनेस होती है कमल की। उसकी हृदय की वो कोमलता होनी चाहिये। ऐसे आपने देखे हैं क्या कोई? कोई ऐसा एकाद दिख जाये तो मुझे आ कर बताना। बहुत मुश्किल है, पैसा आया और गधे बन गये, कुछ नहीं हुआ तो शराब पी लिया, कुछ जुआ खेल लिये। क्या ये आदमी की बुद्धि है कि क्या? जिसके पास पैसा आया उसकी बुद्धि हमेशा उल्टी तरफ जाती है। घोड़े से भी बदतर बुद्धि होती है मनुष्य की। सोच-सोच कर आश्चर्य लगता है। कभी

भी सुबुद्धि नहीं आती है उसको पैसों से, ऐसा पैसा किस काम का! वही पैसा काम का है कि जिससे मनुष्य में सुबुद्धि आये, जिसका धर्म जागृत हो। परमात्मा इसलिये आपको ज़्यादा पैसा देते हैं कि आपके हाथ से धर्म स्थापित हो, संसार का भला हो। धर्म का और पैसे का बड़ा नजदीकी सम्बन्ध है, ये मैं आपको बता दूँ। आप विश्वास करें या ना करें।

कल ही मैंने बताया था कि मैं किसी के घर गयी थी, उन्होंने बताया था कि, 'माताजी, आप जरूर आना यहाँ, यहाँ बहुत रईस लोग हैं, ये हैं, वो हैं।' तो मैंने कहा कि, 'देखो भाई, मुझे ये सब समझता नहीं है रईसों का। पर मैंने कहा कि, 'मैं चलती हूँ।' जैसे ही मैं उस घर के बाहर पहुँची, मैंने कहा कि, 'इस घर में बड़ा भारी शाप है, चाहे ये कितने भी रईस हो।' तो कहने लगे कि, 'कैसे?' मैंने कहा कि, 'बस, शापित है।' मैंने उनके घर में जा कर देखा कि उनके दो बड़े लड़के हैं, जो हर दम बैठे ही रहते हैं, उनके पैर ऐसे और हाथ ऐसे हैं तब से ही जब से वे पैदा हुए थे, तब से वे ऐसा ही है। क्या करने का उस पैसे का? आप तो क्या, हाथी ले कर के आप घूमियेगा? आपके दोनों बच्चे तो ऐसे हो गये हैं। अब बाहर ही मुझे लगा कि ये घर तो शापित है। शाप हो जाते हैं पैसों का। और आपको पैसा का कमाना और उसका घमंड पर धर्म का कोई व्यवस्था नहीं होती है। ऐसे ही अनेक घर शापित हो सकते हैं। किसी की पत्नी देखो, तो पागल हो गयी है। किसी के कुछ हो गया है, किसी के कुछ हो गया है। कोई कहता है, कि हमारे यहाँ बच्चा नहीं हुआ है। किसी के यहाँ कोई कुछ हो जाता है, कहीं कुछ हो जाता है। बच्चा नहीं होना कोई शाप नहीं है। लेकिन जिस तरह से उनके ऊपर उसका असर आता है वो शाप है। इसलिये धर्म और पैसों का बड़ा सम्बन्ध होता है।